भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
केन्द्रीय कमेटी

प्रेस विज्ञप्ति

4 मई, 2018

भारतीय क्रांति के नेताओं में एक और भाकपा (माओवादी) के पोलित ब्यूरो सदस्य कामरेड अरविन्द को लाल-लालसलाम!

भारतीय क्रांति के नेताओं में एक और भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) के केन्द्रीय कमेटी के पोलित ब्यूरो सदस्य कामरेड अरविन्द (सुजित, निशांत) मार्च महीने के तीसरी सप्ताह में गंभीर अस्वस्थता के चलते 65 वर्ष के उम्र में मृत्युंजय हुए।

कामरेड अरविन्द बिहार राज्य के जहानाबाद जिले के एक मध्यम किसान परिवार में जन्म लिये थे। उन्होंने राज्य के राजधानी पटना में बी.एससी. (साइन्स) पूरा की। वे डिग्री पढ़ाई के दौरान प्रज्वलित छात्र-युवा के आंदोलन में शामिल होकर सक्रिय रूप से काम किये। उसी क्रम में क्रांतिकारी आंदोलन के तरफ आकर्षित हुए। और कुछ क्रांतिकारियों से मिलकर कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठन (सी.के.एस.) का गठन किये। भूतपूर्व पीयू पार्टी में विलय हुए। वे पीयू पार्टी के केन्द्रीय कमेटी नेताओं में से एक के रूप में विकसित हुए। उसके बाद भूतपूर्व पीडब्ल्यू और पीयू के विलय के बाद एकीकृत पीडब्लू पार्टी में केन्द्रीय कमेटी (सीसी) के सदस्य के रूप में काम किये। भूतपूर्व एकीकृत पीडब्लू और भूतपूर्व एमसीसीआई के विलय के बाद गठित एकीकृत पार्टी भाकपा (माओवादी) के सीसी और सीएमसी के सदस्य के रूप में काम किये। 2013 में संपन्न सीसी की चौथी बैठक में कामरेड अरविन्द जी को पोलित ब्यूरो सदस्य के रूप में लिया गया और शहीद होने तक वे यही जिम्मेदारी निभाते रहे। लम्बे समय से मधुमेह, रक्तचाप (बीपी) जैसे बीमारियों से शिकार होकर आखिर दिल का दौरा पड़ने से उनकी शहादत हुई। कामरेड अरविन्द जी के प्रति भाकपा (माओवादी) की केन्द्रीय कमेटी विनम्रतापूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके अरमानों को पूरा करने के लिए अंतिम सांस तक लड़ने की शपथ लेती है। उनके परिवार और बंधु-मित्रों के दुख में शामिल होते हुए उन्हें तहेदिल से प्रगाढ़ सहानुभूति व्यक्त करती है।

कामरेड अरविन्द जी का जीवन 1973-74 में राजनीति में आने से लेकर शहीद होने तक बेहद संघर्षशील रहा है। हर एक कदम में, हर एक मोड़ में, हर पल वह प्रगतिशील और क्रांतिकारी पक्ष में खड़े रहे। चार दशकों से अधिक उनकी क्रांतिकारी जीवन बिहार के क्रांतिकारी आंदोलन से, भारतीय क्रांति से अविभाजित रूप से जुड़ी हुई थी और कई अनुभव दिलायी थी। तत्कालीन राजनीतिक परिस्थिति से, वर्गसंघर्ष से, सामंती विरोधी संघर्षों में लाखों जनता के गोलबंदियों से, उनके कार्यरत इलाके में, राज्य में, रीजनल ब्यूरो क्रांतिकारी आंदोलन द्वारा लागू रणनीति-कार्यनीति से, संशोधनवाद के खिलाफ सही लाइन के लिए हुई सैद्धांतिक संघर्ष से, सही लाइन के खिलाफ सामने लाये गये गलत लाइन के विरुद्ध संचालित कई सैद्धांतिक संघर्षों से, छोटे इलाके से, व्यापक ग्रामीण इलाकों में, रणनीतिक इलाकों में हुई क्रांतिकारी आंदोलन के विस्तार से उनके जीवन को अलग कर नहीं देखा जा सकता।

जनवादी राजनीति से क्रांतिकारी राजनीति के तरफ : 1970 के पहले भाग में देश के शोषक-शासक वर्गों के प्रतिनिधि इंदिरा सरकार की तानाशाही शासन के खिलाफ कई जन आंदोलनों का उभार आयी। इन आंदोलनों में लाखों छात्र-युवा जुझारू रूप में शामिल हुए। कामरेड अरविन्द इन आंदोलनों में सक्रिय कार्यकर्ता के रूप काम किये। उन दिनों नक्सलबाड़ी किसान संघर्ष का प्रभाव देश में बेहद असरदार रहा था। बिहार में भाकपा (मा-ले) के राज्य कमेटी सचिव रहते हुए ऐतिहासिक भोजपुर सशस्त्र किसान संघर्ष का नेतृत्व कर शहीद हुए कामरेड जोहार का भी अच्छा-खासा प्रभाव रहा था। इन दोनों के प्रभाव से कामरेड अरविन्द जैसे लोग चारू मजुमदार के लाइन को सही ठहराकर और उसपर विश्वास रखकर क्रांतिकारी राजनीति में आए। वे बिहार में उस लाइन में हुई त्रुटियों को सुधारने की समझ बनाकर 1977-79 के बीच कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठन (सी.के.एस.) को गठित किया। यह कामरेड अरविन्द के क्रांतिकारी जीवन में पहली सीढ़ी था।

सशस्त्र कृषि क्रांतिकारी आंदोलन के नेता के तौर पर : देश में आपातकाल के बाद देशभर में सैकड़ों संख्या में कम्युनिस्ट क्रांतिकारी जेलों से रिहा होकर आये थे। जेल से रिहा हुए कुछ कामरेड सच्चे क्रांतिकारियों को एकताबद्ध करने के एक ही एजेण्डे के साथ कामरेड नारायण सान्याल आदि के नेतृत्व में नवम्बर 1978 में भाकपा (मा-ले) (पार्टी

यूनिटी) गठित किये। कामरेड अरविन्द नेतृत्वाधीन सीकेएस के एक समूह ने भाकपा (मा-ले) (पार्टी यूनिटी) के साथ संपर्क स्थापित किया। इन दोनों ग्रुपों का 1980 में विलय होकर यूनिटी आर्गनाइजेशन (यू.ओ.) गठित हुआ। यही जनवरी 1982 में पंजाब के और कुछ क्रांतिकारियों को मिलाकर भाकपा (मा-ले) पार्टी यूनिटी (पी.यू.) के रूप में संगठित हुई। यह कामरेड अरविन्द के क्रांतिकारी जीवन में दूसरी सीढ़ी थी।

सही लाइन के लिए प्रयास करते हुए क्रांतिकारी पार्टी में शामिल होने के बाद कामरेड अरविन्द उनके अपने मगध क्षेत्र के जहानाबाद, औरंगाबाद और पटना जिलों में सामंती-विरोधी वर्ग संघर्ष और सशस्त्र कृषि क्रांतिकारी संघर्ष शुरू कर, उसे विकसित करने में मदद मिली। सामंतवाद का किला कहलाने वाले बिहार राज्य में क्रूर जमींदारों के खिलाफ, भूमि सेना जैसे उनके निजी सेनाओं के खिलाफ लाखों किसानों को गोलबंद कर गठित आंदोलन एक उभार के रूप में आया था। इसमें मजदूर किसान संघर्ष समिति (एम.के.एस.एस.) ने और उसके नेता के रूप में कामरेड अरविन्द ने प्रधान भूमिका निभायी। कामरेड अरविन्द एक महान आंदोलनकारी थे। वे अपने भाषणों के जरिए किसानों को उद्वेलित करते थे। हजारों किसानों को जुझारू संघर्षों के लिए प्रेरित करते थे। उनके नेतृत्व में किसानों ने सामंतियों को गांवों से भगाते थे। सामंतियों के निजी सेनाओं पर हमले कर सजा दिलाते थे। इसमें उन्होंने एक सक्षम किसान नेता के रूप में किसानों का विश्वास हासिल कर लिया। मगध रीजियन में दलितों पर उच्चजाति के सामंती सेनाओं द्वारा अंजाम दिये गये नरसंहारों के विरुद्ध दलितों को गोलबंद कर सामंती निजी सेनाओं पर सफलतापूर्वक प्रतिरोध कार्रवाइयों को अंजाम देने और उनसे हथियार जब्त करने में भी उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही। यह संघर्ष आसपास के इलाकों में, कोयल-कैमूर इलाके के पलामू आदि 6-7 जिलों में विस्तारित हुई। क्रांतिकारी आंदोलन के विकसित और विस्तार होने के साथ-साथ सामंतियों के बुनियाद हिल गये। सामंतवाद की राजसत्ता टूटने लगी। इसे बर्दास्त नहीं करते हुए इन संघर्षों को कुचलने के लिए राज्य सरकार ने पुलिस कैंप लगाकर बड़े पैमाने पर हमले शुरू किये। 19 अप्रैल 1986 के अरवल में एमकेएसएस के राज्य अधिवेशन पर राज्य पुलिस ने जलियनवालाबाग घटना को याद दिलाते हुए गोलीबारी की। इस घटना में 23 किसान शहीद हुए। 70 लोग घायल हुए। राज्यभर में 40,000 लोगों, कार्यकर्ताओं और नेतृत्वकारी कामरेडों को गिरफ्तार कर लिया गया, यातनाएं दी गयी और जेलों में ठूंस दिया गया। इस दमन के खिलाफ कई जुझारू जन प्रतिरोध आंदोलन चलाए गए।

सामंती विरोधी संघर्षों से आधार इलाकों को स्थापित करने के लक्ष्य से गुरिल्ला जोनों का गठन करने की तरफ बढ़ने के लिए प्रयास : आंदोलन को और एक स्तर तक विकसित करने में कामरेड अरविन्द की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण रहा। कृषि क्रांति में आगे आने वाले शक्तियों को पार्टी यूनिटों में संगठित किया गया। एमकेएसएस और जनमिलिशिया से गुरिल्ला दस्तों को गठित किया गया। सामंती राजसत्ता को उखाड़ कर, पार्टी के नेतृत्व में चार वर्गों के संयुक्तमोर्चा के जरिए जन राजसत्ता की स्थापना करने के लक्ष्य से आंदोलन को विकसित के बारे में पार्टी में चर्चा किये। इस तरह भूतपूर्व पीयू पार्टी के लाइन को विकसित करने के लिए कामरेड अरविन्द जी ने गंभीर प्रयास किये।

कामरेड अरविन्द ने पार्टी के आंतरिक संघर्षों में पार्टी के मौलिक राजनीतिक लाइन पर डटे रहे : पार्टी के आंतरिक संघर्षों में कामरेड अरविन्द पार्टी लाइन पर दृढ़ता से डटे रहे। खासकर 1987 में आयोजित पार्टी की पहली अधि वेशन में पीयू पार्टी के केन्द्रीय कमेटी के सचिव रहे अशोक द्वारा दक्षिणपंथी लाइन लेने की प्रस्ताव रखा गया। उनके द्वारा एक दस्तावेज सामने लाया गया, जिसमें कहा गया था कि हमारे देश अर्धसामंती समाज नहीं है, पूंजीवादी समाज में परिवर्तित हुई, इसलिए दीर्घकालीन लोकयुद्ध का रास्ता छोड़ना लाजिमी है। इस गलत लाइन को कामरेड नारायण सान्याल के नेतृत्व में पार्टी ने बहुमत के साथ ठुकराकर पार्टी लाइन और पार्टी को बचा लिया। इसमें कामरेड नारायण सान्याल के साथ आगे रहने वालों में एक थे कामरेड अरविन्द।

संशोधनवादी पार्टियों के अवसरवादी राजनीति के खिलाफ संघर्ष : कामरेड जोहार के शहादत के बाद, भाकपा (मा-ले) लिबरेशन ग्रुप के नेतृत्व में विनोद मिश्र आये। उन्होंने संशोधनवादी लाइन लिया। उस समय बिहार में मजबूत ग्रुप के रूप में रही इस पार्टी के खिलाफ और मा-ले शिविर के इस तरह के अन्य संशोधनवादी ग्रुपों के खिलाफ पीयू पार्टी द्वारा संचालित संघर्षों में भी कामरेड अरविन्द की भूमिका महत्वपूर्ण थी।

क्रांतिकारियों की एकता के लिए बुनियाद तैयार किये : इस तरह सही राजनीतिक लाइन को लागू करते हुए मजबूत क्रांतिकारी आंदोलनों का निर्माण किये बगैर सच्चे क्रांतिकारियों के बीच एकता हासिल करना संभव नहीं है - इस सही समझ के साथ कामरेड अरविन्द ने मगध में मजबूत आंदोलनों के निर्माण किये। क्रांतिकारी लाइन को सुदृढ़ बनाये। इस तरह उन्होंने क्रांतिकारियों के बीच एकता हासिल करने हेतु भारतीय क्रांति के लिए महान क्रांतिकारी अनुभव दिलाये। यह पीयू पार्टी में एक मोड़ लायी और पीडब्ल्यू और पीयू पार्टियों के विलय के लिए बुनियाद बनायी। इसके जरिए नक्सलबाड़ी से प्रेरित होकर गठित भाकपा (मा-ले) धारा के दो मुख्य पार्टियां - पीडब्ल्यू और पीयू के विलय में उन्होंने मुख्य भूमिका निभायी।

पीडब्ल्यू और पीयू पार्टियां एकीकृत पीडब्ल्यु के रूप में विलय होने के बाद, एमसीसीआई के साथ लगभग तीन साल तक हुए हथियारबंद संघर्ष भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में एक काला अध्याय के रूप में चिन्हित किया

गया और उससे गंभीर नुकसान भी हुई। लेकिन सही सिद्धांत और व्यवहार के आधार पर ही, गहरी आत्मालोचना के आधार पर ही, किसी तरह के अवसरवादी समझौतों को मौका नहीं देते हुए, सच्चे क्रांतिकारी एक दूसरे से सीखते हुए ही सच्ची एकता हासिल कर सकते हैं - इसपर विश्वास कायम रखकर, इसके लिए दृढ़ता से प्रयास करने वालों में एक थे कामरेड अरविन्द। इसने भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन के दो मुख्य धाराएं - एमसीसीआई और पीडब्ल्यू के विलय और भाकपा (माओवादी) के गठन के लिए रास्ता सुगम बनाया।

पार्टी के उच्च स्तर के उत्तम कमांडरों में से एक थे कामरेड अरविन्दः भारतीय क्रांति द्वारा देश के उत्पीड़ित जनता का दिये गये एक उच्च स्तर के उत्तम कमांडरों में से वे एक थे। बिहार में गुरिल्ला युद्ध को विकसित करने में उन्होंने एक मुख्य भूमिका निभायी। सशस्त्र संघर्ष को प्रधान संघर्ष के रूप में, जन गुरिल्ला यूनिटों के रूप में गुरिल्ला दस्ते, प्लाटून और कंपनियों को प्रधान सांगठनिक रूप में विकसित करने पर उन्होंने अपना ध्यान देकर प्रयास किये। भाकपा (माओवादी) के गठन के बाद केन्द्रीय सैन्य आयोग (सीएमसी) के सदस्य के रूप में, पूर्वी रीजनल कमान (इआरसी) के सदस्य के रूप में उन्होंने अपनी जिम्मेदारियां सक्रिय रूप से निभायी। क्रांतिकारी आंदोलन के उन्मूलन के लिए दुश्मन द्वारा संचालित कई आक्रामक अभियानों को विफल करने में, जंगल, पहाड़ और मैदानी इलाकों में गुरिल्ला युद्ध को तेज करने और गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध के रूप में विकसित करने के लक्ष्य से उचित कार्यनीति तय कर अमल करने में बिहार-झारखण्ड में उनकी भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण थी। कई वीरोचित और साहसिक गुरिल्ला कार्रवाइयों में - एम्बुश, रेड और मुठभेड़ों में प्रत्यक्ष रूप से नेतृत्व करने के साथ-साथ कई कार्रवाइयों के लिए सही दिशानिर्देशन देकर उन्हें सफल करने में मुख्य भूमिका निभायी। गुरिल्ला कार्रवाइयों के संचालन में जो भी रुकावट सामने आएं, उन सभी से धीरता से उबर कर अपार पहलकदमी, दृढ़संकल्प, धैर्य और साहस, आत्मबलिदान की चेतना और समझ के साथ उन कार्रवाइयों को सफल बनाते थे। दुश्मन के बलों और हमारे पीएलजीए के बलों के बीच हुई कई मुठभेड़ों में उन्होंने पीएलजीए बलों को साहसिक रूप में नेतृत्व प्रदान कर समन्वय कर दुश्मन के हमलों का मुहतोड़ जवाब दिये। यथासंभव हमारे बलों को बचाते हुए और दुश्मन के बलों पर चोट पहुंचाते हुए प्रत्यक्ष रूप से कमान संभाले। गुरिल्ला युद्ध को उच्चस्तर तक विकसित करते हुए ठोस गुरिल्ला कार्रवाइयों के जरिए चलायमान युद्ध से संबंधित लक्ष्यों को विकसित करने के लिए उन्होंने गंभीर प्रयास किये। जहानाबाद जेलब्रेक, भण्डरिया, धरधरिया और अमवाटीकर जैसे कई गुरिल्ला कार्रवाइयां इसका नमूना है। इआरसी के दायरे में बिहार रीजियन के कोयल-कैमूर इलाके में गठित पहली कंपनी का उन्होंने प्रत्यक्ष नेतृत्व प्रदान की। लगातार प्रयास कर गुरिल्ला युद्ध में कई नए अनुभव दिलाये। राजनीतिक-सैनिक कैंपों के आयोजन में सक्रिय आत्मरक्षात्मक तरीकों को विकसित कर पार्टी और पीएलजीए के सामने एक नमूना उन्होंने पेश किये। वह न सिर्फ सैनिक योजनाएं बनाया थे, बल्कि उन्हें ठोस रूप से अमल करने में प्रत्यक्ष नेतृत्व प्रदान करते थे। वे हमेशा क्षेत्र में पीएलजीए कंपनी में रहकर पार्टी और पीएलजीए का प्रत्यक्ष नेतृत्व प्रदान के कारण वह दुश्मन के मुख्य निशाने में एक बन गये थे। उन्हें मारने के लिए दुश्मन के सैकड़ों-हजारों बल लगातार पीछा करते थे। इसके बावजूद उन्होंने कभी भी दुश्मन का परवाह नहीं करते थे और कभी दुश्मन को अपनी पीठ नहीं दिखायी। दुश्मन द्वारा उनपर चोट पहुंचाने के लिए संचालित कई काउण्टर गुरिल्ला अभियानों के खिलाफ कई संदर्भों में उनके नेतृत्व में पीएलजीए बलों ने कई साहसिक जवाबी हमलों को अंजाम दिया और इसमें दुश्मन के बलों का बड़े पैमाने पर सफाया किया। भाकपा (माओवादी) के गठन के पहले और बाद भी गुरिल्ला युद्ध को विकसित करने में कामरेड अरविन्द ने विशेष भूमिका अदा की।

विस्फोटक और माइनयुद्ध के विशेषज्ञ के रूप में विकसित होकर नए अनुभव दिलाये : गुरिल्ला युद्ध को विकसित करने के लिए आपूर्ति की कमी की समस्या जब बेहद गंभीर थी, विस्फोटकों को तैयार करने में, कई तरह के माइन विकसित करने में, माइनयुद्ध को विकसित करने में कामरेड अरविन्द ने विशेष भूमिका निभायी गयी। विस्फोटक पदार्थों के बारे में गहराई से अध्ययन कर उनपर न सिर्फ पकड़ हासिल किये, बल्कि उनके तैयार करने और इस्तेमाल में कई खतरनाक प्रयोग उन्होंने प्रत्यक्ष और सफलतापूर्वक संचालित किये। पीएलजीए बलों के लिए इसके बारे में पूर्वी रीजियन में कई ट्रेनिंग कैंप और मध्य रीजियन में भी एक ट्रेनिंग कैंप को संचालित किये। नोट्स उपलब्ध कराये। उनके द्वारा विकसित किए गए नयी विज्ञान और तकनीकों को इस्तेमाल कर इंप्रूवाइज्ड विस्फोटकों और डिवाइसों को दुश्मन के बलों पर सफलतापूर्वक प्रयोग कर उन्हें गंभीर नुकसान पहुंचाने में कामरेड अरविन्द की भूमिका मुख्य थी।

गुरिल्ला बलों के आपूर्ति के इंचार्ज के रूप में : भाकपा (माओवादी) के सीएमसी के आपूर्ति के इंचार्जों में एक के रूप में जिम्मेदारियां उन्होंने निभायी। दुश्मन हमारी पार्टी के आपूर्ति तंत्र को निशाना बनाकर ध्वस्त करने के बाद, कठिन परिस्थिति में भी गुरिल्ला बलों को, विशेषकर मध्य रीजियन के लिए आपूर्ति प्रदान करने के बहुत गंभीर प्रयास किये। इसके लिए अपने बंधु-मित्रों को भी इस्तेमाल किये। दुश्मन द्वारा हमारे पार्टी के आपूर्ति तंत्र को सिलसिलेवार निशाना बनाकर नष्ट करने के बावजूद उसे कई बार पुनर्निर्मित करने के लिए उन्होंने अविराम प्रयास किये। उन्होंने युद्ध में हार को देखकर डरे बिना, यह विश्वास रखकर कि हार अस्थायी है, अंतिम जीत जनता का ही है, वह जीत हासिल करने के लिए लगातार प्रायस करने वाले उच्च स्तर के क्रांतिकारी सेना और नेता थे।

दुश्मन के चुंगल में भी दृढ़ योद्धा था : कामरेड अरविन्द ने दो बार गिरफ्तार हुए। हमेशा दुश्मन के दमन का सामना किये। जब दुश्मन में चुंगल थे, गंभीर मानसिक यातनाओं को भी बहुत ही हिम्मत के साथ सामना कर पार्टी गुप्तता बनाये रखे। जेल से रिहा होने के तुरंत बाद अज्ञातवास में आकर पार्टी कतार के पास पहुंचकर पार्टी को नेतृत्व प्रदान किये।

कामरेड अरविन्द की जीवनी पार्टी और भारत के उत्पीड़ित युवक-युवतियों के लिए आदर्श है : कुल मिलाकर देखे तो, कामरेड अरविन्द की जीवन इतिहास दीर्घकालीन लोकयुद्ध में कई उतार-चढ़ाव, ज्वार-भाटों, करवटों का सामना करने के बावजूद, कई साथी कामरेड अपने आंखों के सामने शहादत देने के बावजूद कभी निराशा को पास में आने नहीं देने वाला और अविराम प्रयास करते हुए जनता पर, पार्टी पर और विश्व सर्वहारा पर विश्वास रखकर लड़ने वाला इतिहास था। भारत वर्ष में जनयुद्ध को विकसित करने में, विशेषकर पार्टी लाइन को ठोस रूप से लागू करने में उनकी सेवाएं आपार थी। गंभीर अस्वस्थता के समस्याओं को सामना करने के बावजूद अंतिम तक भूमिगत जीवन में और रणनीतिक इलाके में ही रहते हुए पार्टी कतारों का प्रत्यक्ष नेतृत्व प्रदान किये। उनके बीच ही शहीद हुए। वे क्रांति के लिए समर्पित सर्वहारा के निस्वार्थ योद्धा, कमांडर और नेता थे। जनता और पार्टी कतारों के साथ आत्मसात होकर उनके विश्वास जीतने वाले नेता थे। वे पार्टी को जितना दृढ़ता से नेतृत्व प्रदान करते थे, उतना ही हमेशा हसमुख स्वभाव जनता और कैडरों को उल्लासित करते थे। सभी कामरेडों को अपनी अपार क्रांतिकारी अनुभव बताते हुए उत्साहित करते थे। विशेष मुद्दों पर बिना थके अध्ययन करते थे। वे सीधा-सादा कम्युनिस्ट जीवन बिताते थे। उनके द्वारा दिखाये गये आदर्श पार्टी में ऊपर से नीचे तक कैडरों के लिए, पीएलजीए कमांडरों और योद्धाओं के लिए, नए पीढ़ियों के कैडरों के लिए तथा विभिन्न उत्पीड़ित वर्गों के जनता के लिए अनुसरणीय है। उनकी शहादत से भारतीय क्रांति ने एक महान नेता को खो दिया। लेकिन भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन में और विश्व सर्वहारा के आंदोलन में तथा उत्पीड़ित जनता के दिलों मे सदा जीवित रहेंगे और उन्हें सदा के लिए प्रेरित करते रहेंगे।

आइए! भारत के क्रांतिकारी नेताओं में एक के रूप में क्रांतिकारी आंदोलन के लिए अनमोल सेवाएं देने वाले कामरेड अरविन्द जी द्वारा दिखाये गए आदर्शों को ऊंचा उठाएंगे! क्रांतिकारी आंदोलन द्वारा सामना किए जा रहे इन कठिन परिस्थितियों से उबरने के लिए उनके द्वारा दिखाये गए रास्ते पर क्रांतिकारी आंदोलन को और उच्चस्तर पर विकसित करें! उनके सपनों को पूरा करने के लिए नवजनवादी क्रांति को सफल करते हुए, समाजवाद-साम्यवाद की स्थापना करने तक अविराम संघर्ष करने की शपथ लें!

अभय

(अभय)
प्रवक्ता,
केन्द्रीय कमेटी, भाकपा(माओवादी)